



दादा जी और नटखट बंदर

Mohd Rizwan



एक छोटे से सुंदर गाँव में रामू दादा जी अपने हरे-भरे घर में अकेले रहते थे। उनके आँगन में एक बहुत बड़ा और पुराना आम का पेड़ था, जो मीठे और रसीले आमों से लदा रहता था। दादा जी रोज़ सुबह उठकर अपने पेड़ की देखभाल करते और उसकी ठंडी छाँव का आनंद लेते थे।



एक दिन कहीं से एक नटखट और चुलबुला बंदर उस आम के पे
पर आकर बैठ गया। वह बहुत शरारती था और उसने पेड़ की डालियों
कूदना-फांदना शुरू कर दिया। उसकी इस नई हलचल से दादा जी व
शांत आँगन अचानक शोर-शराबे से भर गया।



बंदर सिर्फ पेड़ पर खेलता नहीं था, बल्कि वह पके हुए मीठे आम को तोड़ता और उन्हें ज़मीन पर इधर-उधर फेंक कर बर्बाद कर देता था रोज़ सुबह आँगन में बिखरे और टूटे हुए आमों को देखकर दादा जी उद हो जाते थे, लेकिन वे चुपचाप सब देखते रहते।



जब गाँव के लोगों ने बंदर की यह करतूत देखी, तो वे बहुत नारा हुए और उन्होंने दादा जी को घेर लिया। सबने एक सुर में कहा कि इ बंदर को पत्थर मारकर या लाठी से डराकर यहाँ से हमेशा के लिए भ देना चाहिए, वरना यह सारे आम खराब कर देगा।



गाँव वालों की गुस्से भरी बातें सुनकर भी दादा जी शांत रहे और उन्होंने अपनी प्यारी सी मुस्कान बिखेरी। उन्होंने सबको समझाते हुए कहा कि हर समस्या का हल लड़ाई या गुस्से से नहीं, बल्कि प्यार और समझदारी से भी निकाला जा सकता है।



अगली सुबह दादा जी ने एक नया उपाय आजमाया और उन्होंने आम के पेड़ के ठीक नीचे एक सुंदर टोकरी में कुछ पके हुए मीठे केले रख दिए। वे जानते थे कि बंदरों को केले बहुत पसंद होते हैं और वे चुपचाप दूर बैठकर देखने लगे।



पेड़ से नीचे झांकते ही बंदर की नज़र उन चमकीले पीले केलों प
पड़ी और वह तुरंत डाल से नीचे उतर आया। उसने मजे से एक-एक
करके सारे केले खाए और उसका पेट भर गया, जिससे उसका गुस्सा
और नटखटपन शांत हो गया।



केले खाने के बाद बंदर तुरंत पेड़ पर नहीं भागा, बल्कि वह वहीं बैठकर दादा जी को बहुत ध्यान और हैरानी से देखने लगा। उसकी आँ में एक अजीब सा कौतूहल था, जैसे वह दादा जी के इस अच्छे व्यवहार को समझने की कोशिश कर रहा हो।



बंदर को धीरे-धीरे यह अहसास हो गया कि दादा जी उससे कोई दुश्मनी नहीं रखते, बल्कि वे तो उसे अपनापन और प्यार दिखा रहे हैं। इस बात ने बंदर के नटखट दिल को छू लिया और उसने दादा जी को नुकसान न पहुँचाने का फैसला किया।



उस दिन के बाद से बंदर ने आमों को तोड़कर बर्बाद करना हमेश के लिए छोड़ दिया। अब वह शांत और समझदार होकर पेड़ की ऊँच डाल पर बैठता, और नीचे बैठे दादा जी उसे देखकर प्यार से मुस्कुरा दे थे।